

एक दिवसीय बुनियादी सत्य शिविर

FOUNDATION TRUTH
एक दिवसीय बुनियादी सत्य शिविर

सरश्री को नमन करके शुरुआत करें ।

शिविर का लक्ष्य (इंटेंशन)

तोलू मन ही बाधा है यह समझ मिले ।

हर सीन अगले सीन की तैयारी है ।

मैं नहीं हूँ कर्ता/**LMC** क्लियर हो जाय ।

सत्याचार्य - शेअरींग

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स । आज के शिविर की शुरुआत करें उसके पहले कुछ खोजी विचारसेवा दें कि संपूर्ण लक्ष्य शिविर जो हमने सुना उससे हमारे जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए । जैसे संपूर्ण लक्ष्य शिविर में हमें स्वीकार मंत्र मिला, तो स्वीकार मंत्र के साथ आपके क्या अनुभव रहे, जरूर विचारसेवा दें । सब्र, नम्र, अग्र, उग्र, विप्र ये प्रतिसाद हमने सुने । सुबह उठने के बाद बिस्तर से बाहर आते वक्त अग्र प्रतिसाद देना है । कभी झगडा हो या नकारात्मक घटना हो तो वहाँ पर नम्र या सब्र प्रतिसाद देना है । जो महत्वपूर्ण बात सरश्रीजी ने बताई थी, कोई भी प्रतिसाद देने से पहले जो अंतराल आता है, वहाँ पर हमें पॉज देना है, रुकना है । यह अंतराल, गॅप हमें प्रतिसाद चुनाव की आजादी देगा यानी इस गॅप में हम रुकते हैं तो सही प्रतिसाद का चुनाव कर पाएँगे । दिल और दिमाग का तालमेल बिठाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम भी हमने समझे । वाक्यशक्ति, शब्दों का महत्व हमने जाना । रोजमर्रा के जीवन में इन टीचिंग्स/समझ का कैसे उपयोग हो रहा है, यह कृपया बताएँ । उन पर कैसे कार्य हो रहा है । तो जरूर आपके अनुभव यहाँ शेअर करें । धन्यवाद ।

इस टॉक के महत्वपूर्ण पॉइंट्स-

१. यह तीन शिविरों की यात्रा है ।
२. उसमें पहला शिविर है बुनियादी सत्य, दूसरा महाआसमानी और तीसरा है संपूर्ण साधना शिविर, जिसके दो पार्ट्स हैं एक है संपूर्ण साधना शिविर भाग १ और दूसरा संपूर्ण साधना शिविर भाग २ ।
३. हम सभी भाग्यवान हैं जो आज हम पहले पड़ाव में उपस्थित हैं ।
४. आज पूर्ण दिवस इस शिविर में हम जो-जो बातें सुनेंगे उससे हम वर्तमान में रहने की कला सीखनेवाले हैं और उसका अनुभव करेंगे । इस शिविर से हमारे भूतकाल और भविष्यकाल के सारे बोझ हटनेवाले हैं ।
५. हमारा शरीर कान ही बन जाय ।
६. सरश्री कहते हैं कि ५ तरह की कृपाएँ होती हैं ।
७. हमें नियमों के साथ कुछ वचनों का पालन भी करना है ।

हमने जो यात्रा की शुरुआत की है, यह पूरी यात्रा हम कैसे करने जा रहे हैं यह अभी हम समझेंगे । यह जो यात्रा है यह तीन शिविरों की यात्रा है, जिससे परम लक्ष्य, अंतिम लक्ष्य हम प्राप्त कर सकते हैं । उसमें पहला शिविर है बुनियादी सत्य, दूसरा महाआसमानी और तीसरा है संपूर्ण साधना शिविर । तो हम सभी भाग्यवान हैं, जो आज हम पहले पड़ाव बुनियादी सत्य शिविर में उपस्थित हैं । भाग्यवान क्यों कहा गया इस पड़ाव के अंत तक समझ में आ जाएगा । बुनियादी सत्य, foundation है महाआसमानी शिविर का, एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, महाआसमानी शिविर की ओर । आज पूर्ण दिवस इस शिविर में हम जो-जो बातें सुनेंगे उससे हम वर्तमान में रहने की कला सीखनेवाले हैं और उसका अनुभव करेंगे । इस शिविर से हमारे भूतकाल और भविष्यकाल के सारे बोझ हटनेवाले हैं । यह शिविर उस ज्ञान की शुरुआत है, जो ज्ञान संत ज्ञानेश्वर को मिला, भगवान बुद्ध व भक्त मीराबाई को मिला था । ऐसा बुनियादी सत्य जो हमें केवल सुनने से प्राप्त होनेवाला है, तो इसे प्राप्त करने के लिए हमारा श्रवण कैसे हो ? ऐसा महत्वपूर्ण तेजज्ञान लेने के लिए हमारा शरीर कान ही बन जाय । संपूर्ण लक्ष्य शिविर से समझी कुछ ही बातों के साथ हम जरूर अपने साथ कुछ परिवर्तन महसूस कर रहे होंगे । ये सभी परिवर्तन/लाभ कृपा के बिना संभव नहीं है । सरश्री कहते हैं कि ५ तरह की कृपाएँ होती हैं । पहली कृपा मनुष्य का जन्म मिलना, दूसरी कृपा उसमें सत्य की प्यास जगना, तीसरी कृपा सत्य बतानेवाले सही गुरु का मिलना, तेजगुरु का मिलना, फिर चौथी कृपा होना यानी तेजगुरु पर विश्वास जगना और पाँचवी कृपा जिसे अंतिम कृपा कहा गया है, वह है गुरु कृपा होना । चार कृपाएँ तो हम पर हो चुकी हैं । मनुष्य का जन्म मिला है , उसमें सत्य की प्यास भी जगी है, सही सत्य बतानेवाले तेजगुरु भी मिले हैं, उन पर विश्वास भी जगा है और आज तैयारी चल रही है उस अंतिम कृपा की । तो इतनी महत्वपूर्ण तैयारी हम करने जा रहे हैं उसे सही तरीके से हम कर पाएँ, उसके लिए हमें कुछ नियमों और वचनों का पालन करना है ।

पहला नियम : पूर्ण दिवस संपूर्ण मौन का पालन करें, मौन का पालन यानी सिर्फ शब्दों का ही नहीं । यह यात्रा अंदर की तरफ है बाहर की तरफ नहीं और जब हम मौन में रहते हैं तो यात्रा अंदर की तरफ होती है इसलिए हम पूर्ण दिवस संपूर्ण मौन का पालन करेंगे । हमें कुछ बातें है जो नहीं करनी हैं, जैसे कुछ भी पढ़ना नहीं है ।

दूसरा नियम : शिविर में किसी भी तरह का अनुमान हम नहीं लगाएँगे कि 'अरे! यह जो बताया, यह तो मैंने सुना है यह तो बहुत

बढ़िया बताया, अच्छ यह ऐसा बताना चाहते हैं। 'ऐसा किसी भी तरह का अनुमान हमें नहीं लगाना है। हमें सिर्फ श्रवण करना है।

तीसरा नियम : पूर्ण दिवसीय शिविर में हमें कपटमुक्त रहना है। जब भी विचारसेवा के लिए कहा जाय तो कपटमुक्त होकर बताएँ ना कि घटाकर/ना छिपाकर/ ना ही बढ़ा चढ़ाकर बताएँ।

चौथा नियम : उच्च ज्ञान का इस्तेमाल निम्न बातों के लिए न हो - उच्च ज्ञान का उपयोग निम्न बातों के लिए नहीं करना है। सरश्री द्वारा जो बातें आ रही हैं, वह आज की भाषा में बताई जा रही है। कोई कठिन शब्द, संस्कृत के शब्द इस्तेमाल नहीं किए जा रहे हैं। तो उन बातों का महत्व हमें कम नहीं करना है। उच्च ज्ञान हमें मिल रहा है तो उसका उपयोग हमें उच्च बातों के लिए ही करना है उसे Cheap talk या हँसी मजाक में किसी को नीचा दिखाने के लिए, इस ज्ञान का उपयोग नहीं करना है।

पाँचवा नियम: दूसरों की गीता नहीं पढ़ेंगे। यानी यहाँ पर अलग-अलग तेजस्थान से खोजी आए हैं, जो विचारसेवा देंगे तो किसी की भी गीता न पढ़ें कि, 'अरे इसने तो ऐसा समझा, मैंने तो कुछ अलग ही समझा।' हमें सिर्फ इतना याद रखना है कि यहाँ पर सिर्फ सरश्री हैं और हम हैं दूसरा कोई नहीं है। यह शिविर सिर्फ सरश्री, आप और इस तेजसारणी में होने जा रहा है। तेजसारणी यानी जो सरश्री से बातें आई हैं। उन्हें लिखित रूप में इस तेजसारणी में रखा गया है। मैं यहाँ पर सत्याचार्य की सेवा दे रहा/रही हूँ, यानी मेरा कार्य सिर्फ कम्यूनिकेशन का है। जो बातें सरश्री द्वारा आई हैं, उन्हें आप तक पहुँचाने के लिए 'मैं' माध्यम का कार्य कर रही/रहा हूँ। मेरा नाम है। (शिविर में अगर दूसरा सत्याचार्य है तो उनका भी नाम बताएँ) शिविर में नियमों के साथ-साथ हमें कुछ वचनों का भी पालन करना है जैसे कि पहला

वचन -

- १) यहाँ पर जो तेजज्ञान मिल रहा है, उसका उपयोग हम हमारी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए करेंगे।
 - २) इस तेजज्ञान का उपयोग दूसरों के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी करेंगे यानी दूसरों के लिए निमित्त बनेंगे।
 - ३) इस शिविर में जो तेजज्ञान हमें मिलेगा उसका जिक्र किसी भी कारणवश हम बाहर नहीं करेंगे। न बताने का कारण आपसे कुछ छिपाने का पर्पज नहीं है बल्कि जिस तरह से यहाँ पर व्यवस्था है और यहाँ दिनभर बिठाकर स्टेप बाय स्टेप ज्ञान दिया जाता है तो ही हम समझ पाते हैं। उसी उच्च ज्ञान को बाहर कोई २ मिनट में समझ नहीं पाएगा। कुछ गलत अनुमान लगाकर इस ज्ञान से मेहरूम रहेगा और खुद का नुकसान करेगा इसलिए बाहर नहीं बताना है। इसलिए हम दिनभर इन वचनों व नियमों का कड़ाई से पालन करेंगे। किसी को अगर कोई दिक्कत है तो तेजसेवक या सत्याचार्य से संपर्क करें।
- इन पाँच नियमों और तीन वचनों का कड़ाई से पालन करने की तैयारी से हम सरश्री से आज के शिविर का पहला प्रवचन सुनने जा रहे हैं। इसे पूर्ण श्रद्धा और भक्ति से सुनें, जिसमें हमें **प्रवचन के कुछ नियमों** का पालन करना है।

१. पहले प्रवचन की शुरुआत में जैसे ही सरश्री स्क्रीन पर दिखाई दे हमें खड़े होकर अभिवादन करना है और फिर हम अपनी जगह पर बैठेंगे। फिर उसके बाद हम मन ही मन अभिवादन करेंगे।
२. श्रवण में किसी भी तरह की बाधा न आए इसलिए यदि हमारे पास Mobile है तो उसे कृपया बंद करके रखें।
३. किसी भी कारणवश न बीच में से उठें न ही बात करें।
४. प्रवचन की बातें न लिखें क्योंकि सुनने और लिखने की क्रिया में मन एक ही समय दो में विभाजित हो जाता है। जिस वजह से

हमसे कुछ महत्वपूर्ण बातें सुनना छूट जाती हैं। ऐसा ना हो इसलिए हमारी ही सुविधा के लिए यह नियम है। और प्रवचन में अगर कोई सवाल पूछा जाय तो ऐसे जवाब दें जैसे सरश्री स्वयं यहाँ पर है और हमें कुछ पूछ रहे हैं।

आज की शुरुआत हम एक प्रार्थना से करने जा रहे हैं। प्रार्थना के लिए सभी अपनी जगह पर जैसे हम हमेशा प्रार्थना करते हैं उस अवस्था में खड़े हो जाएँगे, सभी की आँखें बंद हैं, पूर्ण भाव के साथ सभी मेरे पीछे-पीछे यह प्रार्थना दोहराने जा रहे हैं। (सत्याचार्य प्रार्थना पढ़कर ही बताएँ।)

हे सरश्री, हमें अंधेरे से रोशनी की ओर ले चलिएँ,
हे सरश्री, हमें अज्ञान से तेजज्ञान की ओर ले चलिएँ,
हे सरश्री, हमें मान्यताओं से आत्मसाक्षात्कार की ओर ले चलिएँ।

सभी धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलेंगे और अपनी जगह पर बैठेंगे।

३ कार ऐनालॉजी (पार्ट १)

प्रवचन के पहले-

आइए इस शिविर का सबसे महत्वपूर्ण प्रवचन हम सुनने जा रहे हैं, जिसमें एक गहरी मान्यता के ऊपर सरश्री ने प्रहार किया है, उसे ठीक से समझने के लिए इस प्रवचन को हम कुछ पार्ट में सुनेंगे। पूर्ण ध्यान से पहला पार्ट सुनेंगे। धन्यवाद हॅपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉट्स। २ मिनट सभी आँखें बंद करके तेज मनन करें जो महत्वपूर्ण प्रवचन हमने यहाँ सुना, जिसमें हमें यह समझ में आया कि हमारा तोलू मन कैसे काम करता है। कैसे हमारे तोलू मन की वजह से, हम दुःख भोग रहे हैं। कैसे मान्यताएँ बनती हैं। हमारा तोलू मन कैसा है, उस पर मनन हो। तेजमनन। धन्यवाद सभी धीरे से आँखें खोलेंगे। तेजज्ञान के सेशनस में पावर ऑफ प्रेजेंट सुनते हुए भी हमने तोलू मन के बारे में समझा था कि इंसान के अंदर तोलू मन है, जो दुःख लाता है, बिता हुआ कल या आनेवाले कल में जीता है। इस तोलू मन से मुक्ति पाना लक्ष्य है और आज के शिविर में यही कार्य होनेवाला है। अभी जो प्रवचन हम सुनने जा रहे हैं, उसमें तोलू मन के बारे में और कुछ बातें जानेंगे और उसके साथ ही हमें एक समझ मिलने जा रही है, जिसके बाद मिलेगा एक गुरु मंत्र। एक ऐसा गुरु मंत्र जिससे हमारी बाहर की पूरी दुनिया बदलनेवाली है पर सरश्री चाहते हैं कि हम मंत्र का इस्तेमाल करें तो समझ के साथ करें इसलिए यह मंत्र क्यों दोहराना है पहले इसकी समझ हमें मिलनेवाली है इसे हम सुनेंगे। गुरु मंत्र हम लेंगे लेकिन उसके पहले हम एक कहानी सुनेंगे, जिससे हमें यह स्पष्ट होगा कि मंत्र लेने के लिए हमारी कैसी तैयारी होनी चाहिए। यह कहानी है, एक गुरुजी की। एक दिन गुरुजी जंगल से जा रहे थे, रास्ते में उन्होंने देखा कि एक पेड़ के नीचे एक आदिवासी और उसका बेटा बैठे थे। वे कोई मंत्र बोल रहे थे और उस पेड़ की टहनियाँ अपने आप नीचे आ रही थीं और वे उस टहनियों से फल तोड़कर खा रहे थे और टहनियों वापस ऊपर चली जा रही थी। गुरुजी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि 'अरे ऐसे कैसे हो रहा है, ये दोनों ऐसा कौन सा मंत्र बोल रहे हैं, जिससे यह चमत्कार हो रहा है?' इसी आश्चर्य भाव के साथ वे उस आदिवासी के पास जाकर उससे पूछते हैं कि 'आप ऐसा कौन सा मंत्र बोल रहे हैं, जिससे इस पेड़ की टहनियाँ अपने आप नीचे आ रही हैं?' वे आदिवासी से उस मंत्र की माँग करते हैं कि कृपया मुझे यह मंत्र बताएँ। तब आदिवासी उन्हें कहता है कि कल आप मेरे घर पर आइए मैं आपको मंत्र दूँगा। दूसरे दिन आदिवासी अपने बेटे को कहता कि अगर गुरुजी आज हमारे घर पर आएँ तो उनसे कहना कि पिताजी घर पर नहीं हैं कृपया आप कल आइए'। बेटे को अजीब लगता है कि पिताजी झूठ बोलने के लिए क्यों कह रहे हैं पर पिताजी ने कहा है तो वैसे ही बताना है। जैसे ही गुरुजी आते हैं, बेटा उन्हें यही जवाब देकर वापस भेज देता है। फिर दूसरे दिन गुरुजी आते हैं और बेटा वही जवाब देकर उन्हें वापस भेज

देता है। तीन-चार दिन लगातार ऐसे ही होता है फिर एक दिन गुरुजी आदिवासी के घर पर आते हैं तब बेटा गुरुजी से पूछता है, 'आप हर रोज यहाँ पर आते हैं, पिताजी नहीं मिलते फिर भी आते हैं, आपको उनसे काम है क्या, आपको कुछ चाहिए क्या?' तब गुरुजी बताते हैं, कि मुझे वह मंत्र चाहिए, जो उस दिन आप पेड़ के नीचे बैठकर बोल रहे थे। बेटे ने जवाब दिया कि वह मंत्र मैं आपको देता हूँ बेटा वह मंत्र गुरुजी को देता है। दूसरे दिन गुरुजी आदिवासी के घर पर नहीं जाते। जब आदिवासी अपने बेटे से पूछता है कि 'आज गुरुजी नहीं आए क्या? बेटा बताता है कि गुरुजी नहीं आए और आएँगे भी नहीं क्योंकि वह जिस मंत्र के लिए आ रहे थे वह मंत्र मैंने उन्हें दे दिया। यह सुनकर पिताजी बहुत नाराज हो जाते हैं और अपने बेटे को समझाते हैं कि मंत्र ऐसे ही नहीं देना चाहिए था। वे इतने बड़े गुरु हैं, पता नहीं वे इस मंत्र का इस्तेमाल कैसे करेंगे। उन्होंने यह मंत्र कैसे लिया होगा क्या वाकई उस विश्वास, उस तैयारी के साथ लिया होगा? क्योंकि बिना तैयारी और विश्वास के दिया हुआ मंत्र कभी फलित नहीं हो सकता। फिर कुछ दिनों के बाद एक दिन आदिवासी और उनका बेटा जंगल से जा रहे थे तो उन्होंने देखा कि गुरुजी अपने शिष्यों के साथ बैठे हैं और उन्हें कुछ पढ़ा रहे हैं। जैसे ही गुरुजी ने देखा कि आदिवासी और उनका बेटा आ रहे हैं तो तुरंत वह अपनी जगह से उठे और दौड़कर उन्होंने आदिवासी के बेटे के पैर छुए व उसका आदर किया क्योंकि उसने उन्हें वह मंत्र दिया। यह देखकर आदिवासी को बहुत ज्यादा आश्चर्य हुआ कि 'अरे मैं यह क्या समझ रहा था और यह तो इतने बड़े गुरु होकर भी उन्होंने मेरे बेटे के पैर छुए। तब उसे इस बात का एहसास हुआ कि वे खुद एक गुरु हैं तो वह जानते हैं कि मंत्र श्रद्धा और विश्वास से लिया जाय तो ही फलित होता है। गुरुजी ने उस लड़के को बहुत धन्यवाद दिए क्योंकि उसने उन्हें मंत्र दिया था। उनके अंदर उसके प्रति श्रद्धा के, विश्वास के, धन्यवाद के भाव थे। यह मंत्र तो मन के क्षेत्र का था, फिर भी कितने उच्चतम भाव उठे थे उनके अंदर तो हमारे अंदर किस तरह के भाव हों जब हम मन के परे के क्षेत्र का मंत्र सरस्त्री से सुनेंगे तो उस पर जरूर मनन हो। गुरुजी के अंदर बेटे से भी मंत्र लेने की तैयारी थी तो ग्रहणशीलता कितनी थी? गुरुजी के अंदर उस मंत्र के प्रती वह प्यास जगी थी। तो हम भी देखें आज की तारीख में सत्य और आनंद की प्यास जगी है क्या? क्योंकि वैसी प्यास जगने के बाद ही हम मंत्र को पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से ले पाएँगे।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेंडा रेफर करें।

अगर अर्जेंडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, ब्रेक में मौन का पालन करेंगे, धन्यवाद, हँपी थॉट्स।)*****

मन की पहली टाँग

प्रवचन के पहले-

अभी जो संदेश हम सुननेवाले हैं उसमें सरश्री से तोलू मन के बारे में कुछ और बातें जानेंगे और साथ-साथ हमें एक समझ मिलने जा रही है और उसके उपरांत एक मंत्र । पहले हम समझ प्राप्त करेंगे ताकि जो मंत्र हमें मिलेगा वह हम उस विश्वास के साथ लेंगे । मंत्र जो अंधश्रद्धा से नहीं बल्कि समझ से मिलनेवाला है । तेजज्ञान फाउण्डेशन में समझ को ज्यादा महत्व दिया जाता है । सरश्री कहते हैं, 'सब मान्यताओं का खेल है, समझ अपने आपमें पूर्ण है ।' तो आइए ऐसी समझ को पूर्ण ध्यान और ग्रहणशीलता से सुनते हैं । धन्यवाद हॅपी थॉटस् ।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉटस् । एक समझ जो हमें सरश्री से मिली वह यह कि 'मैं नहीं हूँ..... ।' I am not पर फिर भी मन आकर क्रेडिट लेना चाहता है । हालाँकि सभी घटनाएँ स्वचलित स्वघटित, हॅपनिंग में हो रही हैं और हम कर्ता नहीं हैं । कई बार हमारे साथ ऐसा होता है कि कुछ अच्छा कार्य हमसे हो जाता है और हमें भी पता नहीं होता कि वह कैसे हुआ पर अब पता नहीं ऐसा कहेंगे तो कोई तारीफ नहीं करेगा तो हम कुछ-कुछ बता देते हैं कि मैंने यह सोचा, ऐसा सोचा तो क्रेडिट मिलता है । मगर वह घटना तो स्वचलित हुई थी । आपके अंदर विचार उठा और वह घटना हुई पर बाद में मन आकर क्रेडिट लेता है तो यह है पहली टाँग क्रेडिट लेने की और समझ क्या है कि मैं नहीं हूँ..... । I am not ।

मनन - (मैं नहीं हूँ कर्ता)

(अगर अर्जेडा में ब्रेक है तो ही मनन ब्रेक दे । वरना हॉल में मनन करके ले ।) अभी एक ब्रेक होने जा रहा है तो हम मनन करने के लिए बाहर जाएँगे । मनन करेंगे अपने बचपन में हुई सभी घटनाओं पर जैसे हम स्कूल गए, कॉलेज गए, नौकरी लगी, शादी हुई तो कैसे सभी घटनाएँ स्वचलित स्वघटित हो रही थी और फिर मन आकर क्रेडिट लेता था । उदा. नौकरी लगी तो उस पर विस्तार से मनन करें कि नौकरी लगी तो कैसे लगी ? वाकई हमने बहुत कुछ किया या जो हुआ वह स्वचलित अपने आप हो गया । वैसे ही और कई सारे उदाहरण हम ले सकते हैं जैसे कॉलेज गए, शादी हुई आदि । तो पता चलेगा कि सब कुछ इतना सहज और आसानी से हुआ हमने तो कुछ किया ही नहीं था । मगर मन यह बात पकड़कर बैठा है कि मैंने ही किया था, मैं ही कर्ता हूँ । अब हम इसी समझ के साथ कि हम कर्ता नहीं हैं इस पर मनन करेंगे । धन्यवाद हॅपी थॉटस् ।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें ।)

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें । जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है । जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे । ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, ब्रेक में मौन का पालन करेंगे, धन्यवाद, हॅपी थॉटस् ।)

मंत्र

प्रवचन के पहले-

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉटस् । बाहर जाकर हमने सभी घटनाओं पर मनन किया। कितने खोजियों की यह पकड़ में आया या समझ में आया कि हम कर्ता नहीं हैं और सभी घटनाएँ स्वचलित, स्वघटीत हुई । विचार आया और कार्य हुए वे खोजी हाथ उपर करें । मनन करके हम आगे गुरु मंत्र ग्रहण करने के लिए अंदर आए हैं । गुरु मंत्र कैसे लेना है वह तो हमने गुरुजी की कहानी से समझा । अब हम पूर्ण श्रद्धा से, विश्वास से समर्पित होकर वह मंत्र लेनेवाले हैं वह लेने के लिए हम सरश्री से एक प्रार्थना के रूप में माँग करने जा रहे हैं । जिसमें हम सरश्री को एक वचन देंगे, एक वादा करेंगे और पक्का इरादा करेंगे । 'मैं यहाँ पर प्रार्थना कहूँगा/कहूँगी, मेरे पीछे आप सभी को यह प्रार्थना दोहरानी है । इस दौरान **सभी की आँखें बंद रहें और प्रार्थना के बाद भी आँखें बंद करके ही हमें वापस अपनी जगह पर बैठना है । जब तक सरश्री स्वयं नहीं कहते तब तक आँखें नहीं खोलनी हैं ।** इस प्रवचन में सरश्री ने सभी को मंत्र सही तरह से समझ में आए इसलिए मराठी और अंग्रेजी भाषा का भी इस्तेमाल किया है । प्रार्थना के लिए सभी अपनी जगह पर खड़े हो जाएँ । सभी मेरे पीछे-पीछे प्रार्थना करने जा रहे हैं । (सत्याचार्य प्रार्थना पढ़कर ही बताएँ)

प्रार्थना

हे सरश्री हम वचन देते हैं कि, शिविर में हुई बातों का जिक्र, हम बाहर नहीं करेंगे,
हे सरश्री हम वादा करते हैं कि अंतिम सत्य मिलने तक, आप की बताई हुई राह पर चलेंगे,
हे सरश्री हम पक्का इरादा करते हैं कि हम सत्य सोचेंगे, सत्य कहेंगे और सत्य ही फैलाएँगे

धन्यवाद । धीरे-धीरे सभी अपनी जगह पर आँख बंद करके बैठेंगे । धन्यवाद हॅपी थॉटस् ।

प्रवचन के बाद -

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉटस् । इस प्रवचन में जो गुरु मंत्र हमें सरश्री से मिला एल. एम. सी. देखते हैं....., बघुया....., जिसके साथ एक समझ भी दी गई है आय एम नॉट, मैं नहीं हूँ..... इस समझ और मंत्र के साथ हम एक एक्सरसाइज करने के लिए बाहर जाएँगे और एक्सरसाइज करेंगे । जिसमें पहले विचार आएगा कि पानी पीऊँ, हर क्रिया के पहले मंत्र बोलना है फिर देखें कि पानी पीते हैं, नहीं पीते हैं, अभी पीते हैं या बाद में पीते हैं । विचार आएगा चप्पल पहनूँ, नहीं पहनूँ । हर क्रिया के पहले मंत्र बोलना है फिर देखें चप्पल पहनते हैं कि नहीं पहनते हैं अभी पहनते हैं या बाद में पहनते हैं । **महत्वपूर्ण यह नहीं कि वह क्रिया होती है या नहीं महत्वपूर्ण यह है कि हर क्रिया के साथ हम मंत्र दोहराएँ, जानते रहे और देखें की हॅपनिंग में कैसे स्वचलित, स्वघटित घटनाएँ हो रही हैं और उनका आनंद लें ।** इस एक्सरसाइज में तीन गलतियाँ होने की संभावनाएँ हैं वे समझ लें ताकि वे हम से न हों ।

(१) एल् एम् सी, सी का अर्थ आँखों से देखना है ऐसा नहीं बल्कि उसे जानना है। उदा: कोई बाहर एक्सरसाइज करने के बजाय आस-पास के खोजियों को ही देखता रहे, पेड़-पौधों को, आकाश को ही देखे, ऐसा हमें नहीं करना है सिर्फ अपने साथ क्या हो रहा है उसे जानना है, महसूस करना है। **सी का अर्थ है जानना** कि मंत्र दोहराने से क्या होता है ?

(2) जब कोई कहता है कि मैं करके देखता हूँ कि क्या होता है तो ऐसा नहीं करना है। यानी कोई कहे कि मैं अब चप्पल पहनकर देखता हूँ, मैं अब पानी पीकर देखता हूँ, यहाँ पर करके देखनेवाली बात नहीं आती। क्योंकि हम कर्ता नहीं हैं तो हम कुछ करके कैसे देख सकते हैं। जो भी हो रहा है उसे होने देना है।

(३) कोई कहता है मैं यह नहीं करके देखता हूँ कि क्या होता है तो ऐसा भी नहीं करना है। यानी कोई कहे कि मैं बाहर नहीं जाकर देखता हूँ या बाहर नहीं टहलकर देखता हूँ, यह हमें नहीं करना है क्योंकि कुछ न करना भी हमारे हाथ में नहीं हैं। हमारे शरीर द्वारा कोई क्रिया हुई या नहीं हुई, हमें एल. एम. सी. के साथ मात्र जानना है। हर क्रिया के साथ एल. एम. सी. कहना हैं और छोड़ देना है, वहाँ पर यह देखते नहीं रहना है कि शरीर ने क्रिया की या नहीं। जो भी हो रहा है उसे हँपनिंग में जानना है।

तो सभी बाहर जाएँगे एक्सरसाइज करके वापस आकर विचारसेवा देंगे कि एक्सरसाइज के दौरान क्या अनुभव आये।

अगर किसी को कोई दिक्कत है तो सत्याचार्य से संपर्क करें। धन्यवाद हँपी थॉटस्।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें।

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, ब्रेक में मौन का पालन करेंगे, धन्यवाद, हँपी थॉटस्।)

स्वीकार का महत्व

प्रवचन के पहले-

आप सभी को शुभेच्छा हँपी थॉट्स। अब हम जो एक्सरसाइज करके आए हैं, उस पर शेअरिंग होंगी मगर उसके पहले सरश्री से हम एक छोटा सा प्रवचन हम सुनने जा रहे हैं। जिसमें मंत्र और समझ से संबंधित और क्लियरिटी होगी फिर हम विचारसेवा देंगे। धन्यवाद हँपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद -

आप सभी को शुभेच्छा हँपी थॉट्स। जो एक्सरसाइज हम समझ के साथ करके आए उसमें क्या अनुभव आया उस पर विचारसेवा दें। खोजियों की विचारसेवा (किसी भी नकारात्मक शेअरिंग को सत्याचार्य जवाब न दें। जैसे-जैसे और श्रवण होगा कुछ बातें और स्पष्ट होंगी यह बताएँ। मंत्र समझ पर सत्याचार्य खोजियों को क्लियरिटी दें)।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें।

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, ब्रेक में मौन का पालन करेंगे, धन्यवाद, हँपी थॉट्स।)

सवाल-जवाब भाग १

प्रवचन के पहले-

अभी हम सरश्री से एक प्रवचन सुनने जा रहे हैं, उसमें हम समझ और मंत्र पर कुछ सवाल जो खोजियों ने पूछे थे, उनके जवाब सरश्री से सुनेंगे। हमारे मन में शायद यह सवाल न भी हो पर उनके जो जवाब सरश्री ने दिए हैं वह हमारी और समझ बढ़ाएंगे तो पूर्ण ध्यान से सुनेंगे। धन्यवाद हॅपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉटस्। अभी जो प्रवचन हमने सरश्री से सुना उससे हमने कई सारे सवालों के जवाब समझे। जैसे ईश्वर ऐसा क्यों करता है तो हमने आवाज के उदाहरण से जवाब समझा कि बेसुरे लोग है इसलिए सुरवालों की व्हॅल्यू है। हॅलिकॉप्टर के अँगल से देखेंगे तो सब सही चल रहा है। पॉजिटीव को उठाने के लिए निगेटीव को लाया गया है। पूर्ण सीन को स्वीकार करना है। फिर और एक सवाल था कि पाठ पूजा करें या ना करें? जिसका जवाब हमने समझा कि लेट मी सी मंत्र के साथ हमें देखना है कि क्या होता है, हर कार्य के साथ देखना है कि क्या होता है। पाठ पूजा करते हैं या नहीं करते, मंदिर जाते हैं या नहीं जाते। करने, न करने की बात ही यहाँ पर नहीं चल रही, देखना है क्या होता है। बस समझ के साथ देखना है कि मैं नहीं हूँ कर्ता तो लेट मी सी व्हॉट हॅपन्स...। मन अंदर तो मंदिर यह मंदिर का अर्थ हमने समझा। अगला सवाल था कि करना भी हमारे हाथ नहीं, न करना भी हमारे हाथ नहीं तो फिर हमारे हाथ में क्या है तो देखना हमारे हाथ में है। यू आर सीअर-हमें देखना है कि क्या होता है। उसके उपरांत और एक महत्वपूर्ण जवाब हमने समझा कि भगवान बुद्ध ने कहा अपने दिए आप बने- लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि भगवान बुद्ध ने यह किसे कहा, सामनेवाला साधक किस लेवल का था, किस ग्रुप का था। जैसे पाप क्या, पुण्य क्या इस सवाल का जवाब सामनेवाला साधक के लेवल के हिसाब से बदल जाता है। आज हमने समझ पाई है तो, एक लेवल बढ़े है तो हमें यह जवाब दिया जाएगा कि जिसमें कर्ता भाव है वह पाप है, जिसमें अकर्ता भाव है वह पुण्य है। फिर आगे हमने समझा कि बाहर की दुनिया में हम यह बोल सकते हैं कि यह मैंने किया लेकिन अंदर यह समझ हो कि करवाया गया। तो इस जवाबों से काफी क्लियरिटी प्राप्त हुई रहेगी।

सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें।

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, ब्रेक में मौन का पालन करेंगे, धन्यवाद, हॅपी थॉटस्।)

मन की दूसरी टाँग

प्रवचन के पहले-

अभी हम मन की दूसरी टाँग के बारे में समझने जा रहे हैं। मन की दूसरी टाँग अगर गिरती है तो हमारे काफी बोझ तुरंत खत्म हो सकते हैं तो आइए पूर्ण ध्यान से सुनें। धन्यवाद हँपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद -

आप सभी को शुभेच्छा हँपी थॉट्स। मन की दूसरी टाँग हमने सुनी कलाबाजी, कैसे मन कलाबाजियाँ खाता है। एक व्हरटिकल विचार यानी लंबरूप, सीधा, खड़ा (सत्याचार्य हाथ करके दिखाएँ) पर मन हजार हॉरीझॉन्टल यानी समांतर, अलग-अलग विचार लाता है। (सत्याचार्य अर्जेडा के अनुसार चाय/ सुप की अनाउन्समेंट करें।) तो उसके पहले हमें एक पार्ट पूर्ण करना है। (सत्याचार्य सामने के कुछ खोजियों अंदाजन 12-15 को बाहर भेजें। तेजसेवक उन्हें बाजू के हॉल में ले जाकर बताएगा कि हर एक खोजी को स्टेज पर जाकर 2 मि. बोलना है, टॉपीक स्टेज पर जाकर ही पता चलनेवाला है। 5 मिनट का समय है उसमें तैयारी करें। मेन हॉल में स्टेज पर एक बॉक्स भी लाकर रख सकते हैं, जिसमें नंबर रहेंगे। अंदर हॉल में बचे हुए खोजियों को सत्याचार्य बताएँ कि) यहाँ पर बैठे हुए खोजियों में से किसी का भी नंबर लिया जाएगा, उनको सामने आकर अभी तक जो बातें हमने समझी है वह बतानी है। 2 मिनट का समय है, तो सभी मनन करें क्या बातें समझी है। किसी का भी नंबर लिया जाएगा। (2-3 मिनट के बाद सभी खोजियों अंदर हॉल में बुलाएँ। सभी खोजी अंदर आने के बाद 1-2 खोजियों से विचारसेवा लें।) विचारसेवा इस बात पर देनी है कि **जब हमने सुना कि हमें सामने स्टेज पर आकर बात करनी है तो क्या विचार आएँ?** वैसे यहाँ पर किसी को भी स्टेज पर आकर बात नहीं करनी है। यह जो एक्सरसाइज थी जो हमने कलाबाजियों को समझने के लिए की। जब हमें बताया गया कि स्टेज पर बात करनी है तो क्या बात करनी है यह छोड़कर बाकी जो-जो भी अनचाही, गैरजरूरी बातें याद आई उन सभी बातों को कहते हैं कलाबाजियाँ। तो एक विचार दिया कि स्टेज पर बातें करनी हैं और इस विचार पर कितने सारे विचार आने शुरू हुए। कई सारे बातों की कलाबाजियाँ चल रही थीं। किसी को डर के विचार आए होंगे। मैंने तो पहले कभी स्टेज पर बात की ही नहीं। मुझसे होगा ही नहीं मुझे तो कुछ याद ही नहीं, इन सारे विचारों को कहते हैं, कलाबाजियाँ। अभी एक्सरसाइज ब्रेक होगी जिसमें हम बाहर जाएँगे कोई भी विचार आएँगे तो कहेंगे कि एल. एम. सी. देखते हैं ... बघु या ...। विचार आएगा कि शिविर छूटने के बाद मुझे इसे फोन करना है, उसकी जानकारी लेनी है, बच्चों का क्या हुआ रहेगा, ऑफिस के काम का क्या हुआ रहेगा, यह करना है, वह करना है। हर विचार के बाद एल. एम. सी. कहना है। हर विचार के साथ मंत्र कहकर देखें कि क्या होता है। एक्सरसाइज करके जैसे ही भजन चलेगा, तुरंत अंदर आएँगे क्योंकि ब्रेक के बाद तुरंत एक 5 ही मि.का महत्वपूर्ण प्रवचन है तो वह मिस न हो। किसी एखाद को अगर कोई दिक्कत है तो आकर मिले। धन्यवाद हँपी थॉट्स।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें।)

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, ब्रेक में मौन का पालन करेंगे, धन्यवाद, हँपी थॉटस्।)

३ रिश्कशन

प्रवचन के पहले-

आप सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉट्स । एक्सरसाइज हम करके आएँ उस पर विचारसेवा होगी, उसके पहले हम एक छोटा सा ५ मि. का प्रवचन सुनने जा रहे हैं, उसे ध्यान से सुनेंगे । धन्यवाद हॅपी थॉट्स ।

प्रवचन के बाद -

आप सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉट्स । कुछ खोजी विचारसेवा दें, जो एक्सरसाइज हमने अभी की, उसमें क्या अनुभव आए । विचारसेवा, (कुछ बातें जो विचारसेवा के दौरान सत्याचार्य अपने टॉक में क्लियर करें - जब खोजी विचारसेवा कर रहे हो तो जब यह विचारसेवा आएगी कि एल. एम. सी. करते-करते विचार ही आना बंद हो गए । यह पूछें कि कितने लोगों के साथ ऐसा हुआ । कई सारे खोजी हाथ ऊपर करेंगे । तब उन्हें यह क्लियर करें - आज इस ब्रेक में जब हमने एक्सरसाइज की काफी छोटा समय था, मगर एल. एम. सी. के साथ हमें विचारशून्य अवस्था प्राप्त हुई । एक्सरसाइज करते-करते हमें विचार आना ही बंद हो गए । हम देखेंगे कि यह कितनी आसानी से हो गया, हमें ज्यादा कुछ करना भी नहीं पड़ा । मगर बाहर लोग इसी अवस्था को प्राप्त करने के लिए क्या-क्या नहीं करते हैं, जप, तप, कर्मकाण्ड, ध्यान धारणाएँ, ऐसी कई सारी बातों में लोग उलझे हुए हैं, मगर फिर भी उन्हें यह अवस्था प्राप्त नहीं होती । यह कितनी बड़ी बात हमारे साथ हो चुकी है । सरश्री ने जो गुरु मंत्र हमें दिया है, दिखने में ३ ही शब्द है, मगर बहुत बड़ी और महत्वपूर्ण चीज दी है और वह भी इतनी सहजता से, हँसते-खेलते, हमें आसानी से समझ में आए ऐसी भाषा में । जो सत्य भगवान बुद्ध को मिला था, महावीर को, गुरु नानक और भक्त मीराबाई को मिला था, वही अंतिम सत्य इस मंत्र के द्वारा धीरे-धीरे हमारे जीवन में उतर रहा है । वही अवस्था हमें प्राप्त होने जा रही है । यह कितनी बड़ी कृपा हम पर हो चुकी है । अंतिम सत्य यहाँ पर बताया जा रहा है । जिसके लिए हमें ज्यादा कुछ करना भी नहीं है । मात्र हम उपस्थित रहकर सुन रहे हैं और हमारे साथ ये बातें हो रही हैं । जितना हम इस मंत्र पर काम करेंगे, मनन करेंगे उतनी ही इसकी गहराई पकड़ में आएगी, इसका महत्व हमें पता चलनेवाला है । इसके अलावा खोजियों की ओर से एक सवाल हमेशा से आता है कि एल. एम. सी. के साथ विचार नहीं आएँगे क्या ? फिर सारे काम कैसे होंगे ? तो उन्हें बताया जाता है कि हम एल. एम. सी. का इस्तेमाल करेंगे तो विचार नहीं आएँगे ऐसा नहीं है । जो विचार जरूरी है, शरीर से काम करवाने के लिए हैं वे विचार तो आएँगे ही । मगर अनावश्यक विचार भी साथ में आते हैं, यानी मन की कलाबाजियाँ जिनमें बहुत सारा समय अनावश्यक गवाँ देते हैं, वह विचार आने बंद हो जाएँगे । जैसे एक विद्यार्थी है उसे परीक्षा की तैयारी करनी है । उसे पहला जरूरी विचार आया कि पढ़ाई करनी है, और साथ फिर विचार आना शुरू हुए कि अरे, अब कैसे पढ़ाई होगी, पूरी होगी क्या ? पूरी नहीं हुई तो परीक्षा कैसी होगी ? फेल तो नहीं हो जाऊँगा, फेल हुआ तो क्या ? मेरे करियर का क्या होगा ? लोग क्या कहेंगे ? ये सारे अनावश्यक विचार थे कलाबाजियाँ थीं जिनमें बहुत सारा

समय बरबाद हो गया और पढ़ाई नहीं हुई। इसके बजाय जैसे ही उसके मन में पहला विचार आया कि पढ़ाई करनी है तो तुरंत वहाँ पर एल. एम. सी. कहा और फिर सहज मन से पढ़ाई का नियोजन होने दिया कि अब इतने समय में ये सभी विषय पूर्ण करने हैं। इसलिए नियोजन के विचार जरूरी हैं, शरीर से परीक्षा दिलाने के लिए, पढ़ाई करवाने के लिए ऐसे विचार आएँगे ही। एल. एम. सी. के साथ इन विचारों में ना उलझते हुए सहज मन से सभी कार्य होंगे। नियोजन भी होगा, पढ़ाई भी होगी। इस तरह से कलाबाजियों में जानेवाला समय बचेगा और साथ ही हमारी कार्यक्षमता भी बढ़ेगी। पूरी पढ़ाई आनंद से और बढ़िया ढंग से होगी। इसी तरह से गृहिणीयों को घर में अपने कामों में और सभी को ऑफिस में इसका उपयोग होगा। वे वहाँ पर अपना काम और बढ़िया ढंग से कर पाएँगे। हमारे पारिवारिक रिश्तों में भी यह टाँग टूटने की वजह से सुधार आएगा।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें।)

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, ब्रेक में मौन का पालन करेंगे, धन्यवाद, हँपी थॉट्स।)

३ री टाँग

प्रवचन के पहले -

अभी तक हमने मन की पहली और दूसरी टाँग सुनी, credit और कलाबाजियाँ । अब हम मन की ३री टाँग सुनने जा रहे हैं । उसे ध्यान से सुनें । धन्यवाद हँपी थॉट्स ।

प्रवचन के बाद -

आप सभी को शुभेच्छा, हँपी थॉट्स । अभी हमने सरश्री से मन की ३ री टाँग यानी कपट करना यह सुना । हमने जाना कि मन कैसे हमेशा कपट करता है । समझा की कपट क्या होता है ? कुछ भी छिपाकर, घटाकर, बढ़ा-चढ़ाकर बताना, झूठ बोलना भी कपट ही है । उदा- कोई हमसे छुट्टे पैसे माँगता है और हम झट से नहीं है ऐसा बोलते हैं, हालाँकि हमारे पास पैसे होते हैं तो वहाँ पर क्या हम जैसे सरश्री ने बताया की ऐसा बोल सकते हैं कि छुट्टे पैसे है मगर मुझे चाहिए । मगर हम आदतवश ऐसा कह देते हैं । ऐसी कई सारी घटनाएँ हर रोज हमारे साथ होती हैं, जैसे हमारे दोस्त का जन्मदिन है और हमने बधाई देने के लिए फोन नहीं किया, भूल गए । वह दोस्त वापस जब मिलेगा तब हम उसे यह नहीं कहते कि, हम भूल गए थे, बल्कि कोई न कोई झूठ बोल देंगे । हम अपने जीवन में देखेंगे कि कितना सारा कपट हर जगह पर हमेशा चलता है जिसकी कोई जरूरत नहीं होती । अब हम यहाँ पर एक एक्सरसाइज करनेवाले हैं । इस एक्सरसाइज में हम अपने पास बैठे हुए खोजी को सहयोगी बनाएँगे । जैसे ही स्टार्ट कहा जाय हर खोजी अपने सहयोगी को अपने जीवन में कौन-कौन से कपट ज्यादातर होते हैं वे शेअर करेंगे फिर एक का होने के बाद दूसरा भी सहयोगी बनकर उस खोजी को ऐसे ही शेअर करेंगे । जैसे ही स्टॉप कहा जाय तो हम रुकनेवाले हैं । यह एक्सरसाइज हमें कपटमुक्त होकर करनी है । क्योंकि सरश्री बताते हैं कि कम से कम यहाँ पर तो कपटमुक्त हो जाएँ । यहाँ पर हम कपटमुक्त हो पाएँ तो संभावना है कि बाहर हर जगह कपटमुक्त हो जाएँगे, मगर यदि यहाँ पर ही कपटमुक्त नहीं हो पाए तो जीवन में कैसे हो जाएँगे । कपट की एक्सरसाइज में कपट ना हो, वरना समय मिला है तो एक्सरसाइज छोड़कर और बातचीत कर रहे हैं ऐसा ना हो । यहाँ पर और एक बात का हमें खयाल रखना है कि सामनेवाले खोजी के बारे में हमें कुछ भी अनुमान नहीं लगाने हैं । हमें उनके लिए केवल निमित्त बनना है कि हम उनकी विचारसेवा सुने और उन्हें कपटमुक्त बनने के लिए निमित्त बनें । (पहले सहयोगी तय करने दें, फिर ही स्टार्ट कहकर एक्सरसाइज शुरू करें ।) एक्सरसाइज । धन्यवाद । कितने खोजियों ने यह महसूस किया कि काफी सारी जगहों पर हम कपट करते हैं और हमें पता भी नहीं होता । धन्यवाद । तो आज के बाद कम से कम ऐसे जगहों पर तो कपट न हो, जहाँ जरूरी नहीं है और यहाँ पर तो हम बिल्कुल भी कपट न करें ।

ऑफिस से छुट्टी चाहिए तो हम क्या-क्या बताते हैं । कोई बीमार है हॉस्पिटल जाना है, कोई रिश्तेदार गुजर गया । कोई ५०० रुपए की चीज खरीदता है तो दोस्तों को ७०० रुपए बताता है । यह सब कपट है । पति-पत्नी कहीं जा रहे हैं अगर गाडी का समय ९ बजे का है तो पति कपट करके ८.३० बताता है । पत्नी को भी यह कपट पता रहता है कि ८.३० बजे कहा तो ९ बजे की

गाड़ी होगी। कई बार हमारी सैलरी बढ़ा चढ़ाकर बोलते हैं। तो सभी कपट के उदाहरण हैं। सरश्री कहते हैं जैसे-जैसे हमारे जीवन से कपट कम होने लगेगा, सत्य हमारे जीवन में उतरने लगेगा।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें)

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, ब्रेक में मौन का पालन करेंगे, धन्यवाद, हँपी थॉट्स।)

सवाल-जवाब पार्ट २

प्रवचन के पहले -

अब तक मन की चार टाँगों के बारे में हमने सरश्री से सुना, अब हम सरश्री से एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रवचन सुनने जा रहे हैं, जिसमें सरश्री ने मन की चार टाँगों के बारे में कुछ सवालों के जवाब दिए हैं। शायद हमारे अंदर वह सवाल न हो पर इसे महत्व से सुनेंगे तो आगे चलकर हमें कोई भी शंका नहीं रहेगी और हमें मंत्र और समझ की और गहराई प्राप्त होगी। तो पूर्ण ध्यान से सुनेंगे। धन्यवाद हँपी थॉट्स।

प्रवचन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा, हँपी थॉट्स। अभी जो प्रवचन हमने सरश्री से सुना, उससे कलाबाजियाँ और कपट इन मन की टाँगों के बारे में और बातें हमने गहराई से समझीं। जैसे किसी खोजी का सवाल था कि कभी-कभी कपट कर सकता हूँ क्या? तो लेट मी सी के साथ देखना है कि क्या होता है। तो आनंद को आने दो, असली चीज को आने दो फिर समझ के साथ क्या होगा की जहाँ जरूरत नहीं वहाँ कपट अपने आप खत्म होते जाएंगे। कपट के बारे में और हमने समझा कि जिस कपट के लिए आज की तारीख में हम कुछ भी नहीं कर सकते उसे रहने दें मगर जो जरूरी नहीं है, जो लोभ, लालच की वजह से करते हैं, वह तो कपट बंद करे। आगे एक सवाल आया था कि निर्णय कैसे ले? तो जब भी सवाल आएगा कि क्या करूँ तो लेट मी सी के साथ वर्तमान में आ जाएँगे। जब हम दूसरों की समस्या सुलझाते हैं तो जल्दी जवाब आते हैं क्योंकि हम उनकी समस्या से अलग होते हैं तो लेट मी सी मंत्र के साथ हम भी समस्या से अलग होते हैं, वर्तमान में आ जाते हैं और आसानी से हमें जवाब मिलते हैं। अगला सवाल था कि भविष्य के बारे में पॉजिटिव कलाबाजियाँ लगानी चाहिए क्या? इस पर जो मार्गदर्शन मिला है वह बहुत ही महत्वपूर्ण है, जिसमें हमने समझा कि जब हम शांत होते हैं तब दुनिया की बेहतरीन चीज हमारी तरफ आकर्षित होती है। जब हम बहुत विचारों से भरे होते हैं तो चीजों को हम दूर भगा देते हैं। एल. एम. सी. मंत्र के साथ कलाबाजियाँ खत्म होती हैं और शून्य होकर हम बेहतरीन चीज हमारी तरफ आकर्षित करते हैं तो काफी महत्वपूर्ण बातें हमने इस प्रवचन के साथ समझी हैं।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेंडा रेफर करें।

अगर अर्जेंडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, ब्रेक में मौन का पालन करेंगे, धन्यवाद, हँपी थॉट्स।)

सामनेवाला भी कर्ता नहीं

अभी तक की बातों से जिन खोजियों को लगता है कि आय एम नॉटक्लिअर है, हाथ ऊपर करें। धन्यवाद। तो अब वह मनन करें कि सामनेवाला भी कर्ता नहीं है। पुरानी घटनाओं में यह तो स्वीकार हो जाता है कि हम कर्ता नहीं हैं, जिस पर हमने मनन किया। पर सामनेवाला भी कर्ता नहीं है यह बात जल्दी स्वीकार नहीं होती। (सत्याचार्य अर्जेडा के अनुसार अनाउंसमेंट करे, यदि अर्जेडा में ब्रेक है तो ब्रेक दे वरना हॉल में ही मनन करवाएँ।) अब एक ब्रेक होने जा रहा है, जिसमें हम मनन करें हमारे जीवन की ऐसी घटनाएँ जहाँ किसी ने कुछ अलग व्यवहार किया होगा और हम आज तक उन्हें दोष देते आए थे। लेकिन वे भी कर्ता / डुअर नहीं थे। उस वक्त भी सब कुछ स्वचलित, स्वघटीत ही हो रहा था। अपने आपको इसके मनन करके सबूत दें। हो सकता है कि ऑफिस या घर में ऐसी कुछ घटनाएँ हुई हों। लेकिन अब हमने समझा है कि सामनेवाला भी कर्ता नहीं था, उससे वह करवाया गया। इस समझ से उन सभी घटनाओं पर मनन करके आएँ। अब सिर्फ वे ही खोजी यहाँ पर रुकें जिन्हें मंत्र या समझ क्लिअर नहीं हुआ है। (जिन्हें क्लिअर नहीं है उन खोजियों से बातचीत करें और उन्हें मंत्र और समझ समझाएँ।)

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें।)

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरींग/हॉल शेअरींग/मनन ब्रेक की अनाउंसमेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, ब्रेक में मौन का पालन करेंगे, धन्यवाद, हँपी थॉट्स।)

कॉन्ट्रास्ट माईंड समर्पण

प्रवचन के पहले-

अभी तक हमने तोलू मन की चार टाँगे समझीं, उससे यह पकड़ में आया होगा कि तोलू मन कैसे बाधा बनता है यह हमने जाना। तो इस तोलू मन से हम कैसे मुक्त हो जाएँ यह हम अभी के प्रवचन से जाननेवाले हैं। प्रवचन से समझ में आएगा कि इस बाधा से अगर मुक्त होना है तो क्या समर्पित होना चाहिए? किसका समर्पण होना जरूरी है?

यह प्रवचन एक विशेष प्रवचन है, विशेष इसलिए कि यह प्रवचन सरश्री द्वारा गुरुपौर्णिमा के अवसर पर दिया गया है, उस वक्त ऐसे खोजी उपस्थित थे, जो बहुत पुराने खोजी थे और उनका महाआसमानी शिविर हो चुका था। इस प्रवचन में सरश्री ने कुछ बातें खोजियों से माँगी हैं, उन्हें गहराई से सुनना। सुनते वक्त ऐसी कुछ बातें दिखेंगी, लगेगी जिनकी वजह से प्रवचन से ध्यान हटने की संभावना है, मगर जैसे शुरुआत में कहा कि यह गुरुपौर्णिमा का प्रवचन है और गुरुपौर्णिमा के दिन हर खोजी चाहता है कि गुरु की पूजा करें, उन्हें तिलक लगाएँ, उन पर फूल बरसाएँ तो ऐसी कुछ बातें आपको दिखेंगी तो हमारा ध्यान उस पर न होते हुए सरश्री क्या बता रहे हैं, उस बात पर हो। सरश्री ने ऐसी चीज का समर्पण करने को कहा है कि जो समर्पित होते ही असली बात शुरू होती है।

सभी श्रद्धा भाव से, भक्ति से इस प्रवचन को सुनेंगे, गुरुपौर्णिमा का प्रवचन है तो वही भक्ति, वही भाव, वही अवस्था में रहते हुए प्रवचन को ग्रहण करेंगे। धन्यवाद हॅपी थॉटस्।

प्रवचन के बाद -

आप सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉटस्। इस प्रवचन में सरश्री से हमने समझा तोलू मन के बारे में कि कॉन्ट्रास्ट माईंड कैसे काम करता है। हमने सरश्री द्वारा सुना कि आज यहाँ पर हमें अपना तोलू मन सी. एम. समर्पित करना है। तोलू मन, जिसकी ७ टाँगे हैं जो हमेशा तुलना करता है, तोलता है और हमें दुःख देता है। तुलना यानी यह अच्छा हुआ, यह बुरा हुआ इस तरह की बातें सोचता है। उसी प्रकार, यह ज्यादा अच्छा, यह ज्यादा बुरा ऐसा कहता है। सरश्री कहते हैं कि अंतिम सत्य जानने के लिए या सत्य के रास्ते पर चलते समय तोलू मन बाधा है। तोलू मन यानी ऐसा मन जो क्रेडिट लेता है, कलाबाजियाँ खाता है, कपट करता है, लेबल लगाता है और एक सहज मन है। तो सभी को तोलू मन का समर्पण करना है। अब सवाल आता है कि इसे कैसे समर्पित करे? कुछ समय के बाद जो एक ब्रेक होने जा रहा है, उसमें हमें बाहर जाकर अपने तोलू मन को प्रतिकात्मक रूप देना है। इसलिए बाहर कुछ पेपर्स हैं जिनके द्वारा आप अपना तोलू मन प्रतिकात्मक रूप से, जैसे कोई चित्र बनाकर, कोई शब्द लिखकर या फिर कोई क्रिएटिव तरीके से, कागज पर आप अपना तोलू मन बनाकर आपको उसे समर्पित करना है। (सत्यआचार्य पी पी टी दिखाएँ।) तो आपके तोलू मन को प्रतिकात्मक रूप में पेपर पर लाएँ और अपना नाम उस पेपर पर लिखकर उस पेपर को यहाँ तेजस्थान पर समर्पित करना है। जैसे तोलू मन को समर्पित किया, उस समर्पण को आगे कैसे बरकरार रखें, जिससे वह अंतिम सत्य हर क्षण वर्तमान में जीना सहज हो जाएगा यह हमें सरश्री से समझना है। यदि

आपका कोई सवाल है तो मिलकर बात करके जाए। तोलू मन का चित्र या शब्द जादा महत्व नहीं रखता, परंतु उसके पीछे के समर्पण, श्रद्धा और विश्वास के भाव जादा महत्वपूर्ण है। तोलू मन के इस प्रतिकात्मक समर्पण से हम उससे मुक्त हो जाते हैं। मनन के बाद तोलू मन को पेपर पर उतारेंगे और जैसे ही भजन लगेगा उसे तेजस्थान पर आकर समर्पित करना है। धन्यवाद हँपी थॉटस्। अगर किसी को तोलू मन के बारे में समझा नहीं है, शंका है तो जरूर बात करें।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें।

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरींग/हॉल शेअरींग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, ब्रेक में मौन का पालन करेंगे, धन्यवाद, हँपी थॉटस्।)

थॉट नंबरिंग मेडिटेशन

मेडिटेशन के पहले -

अभी हम एक मेडिटेशन करने जा रहे हैं, जिसका नाम है थॉट नंबरिंग मेडिटेशन। इसमें हम क्या करनेवाले हैं, जो-जो विचार अंदर उठेंगे, उन्हें नंबर देने हैं। पहला विचार आया तो १, दूसरा विचार आया तो २, आगे ३... ४...५... ऐसे विचारों को हम मन ही मन नंबर देंगे। जैसे पहला विचार आया की और कितनी देर तक शिविर चलेगा, तो उस विचार को नंबर देंगे। फिर विचार आया की घर जाने के बाद मैं यह करनेवाले हूँ, तो इसे दो नंबर देंगे। तो ऐसे विचारों को नंबर देंगे। इसमें खयाल क्या रखना है कि हमें तटस्थ होकर विचारों को नंबर देने हैं। उन विचारों के पीछे नहीं जाना है। यह पहला विचार, यह २, ३.४.५...६...७... इस प्रकार से हम नंबर देते जाएँगे। तो आइए हम यह मेडिटेशन करते हैं। सभी की आँखें बंद हैं। विचारों को नंबर दे रहे हैं।

मेडिटेशन के बाद-

आप सभी को शुभेच्छा हँपी थॉटस्। हर विचारों को नंबर दिया। विचार के पीछे-पीछे न जाते हुए डिटॅच होकर इन विचारों को नंबर दिया। ऐसे कितने खोजी है कि उनके विचार बहुत कम हुए थे या गायब हुए थे, शांति थी वे हाथ ऊपर करें। धन्यवाद। तो हम क्या करनेवाले हैं, जब-जब यहाँ बेल बजता है, घंटा बजता है हमें यह ध्यान करना है। हर घंटे में जब १:१, २:२, ३:३, ४:४ ऐसा समय होता है तब यह बेल बजता है। तो इसका पूरा लाभ हम उठाएँगे। इस ध्यान से क्या-क्या फायदे होते हैं यह भी जान ले। पहला तो खुशी मिलती है, शांति मिलती है। विचार कम हो जाते हैं, विचार शून्य अवस्था की तरफ हम बढ़ते हैं। आगे के ध्यान में मदद मिलती है।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करे।

अगर अर्जेडा में है तो, लंच ब्रेक/चाय/शरबत/सुप/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें। जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है। जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे। ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, ब्रेक में मौन का पालन करेंगे, धन्यवाद, हँपी थॉटस्।)

धन्यवाद

आप सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉट्स। सभी ने अपना तोलू मन सरश्री के सामने समर्पित किया है। एक बार हमने तोलू का समर्पण किया तो अब सरश्री देखेंगे कि उसका क्या करना है, उसकी समझ कैसे बढ़ेगी जिससे समर्पण होगा। सुबह से हम एक-एक कदम आगे चल रहे हैं। जिसके दौरान कई सारी गहरी मान्यताओं पर प्रहार हुआ, और जोर से हुआ। मन की चार टाँगे समझ में आईं, उसमें क्या-क्या गलतियाँ हुईं वे भी समझ में आईं। इसके बाद धन्यवाद उठते हैं सरश्री के प्रति जिन्होंने इतनी सुंदरता से बताया, जिससे ये सारी बातें हम समझ पाएँ। यही कहा जाता है कि कोई भी विद्या तब तक फलित नहीं होती जब तक हम गुरु को गुरुदक्षिणा नहीं देते। अभी मैं यहाँ पर खड़ा/खड़ी हूँ सरश्री की तरफ से आपसे गुरुदक्षिणा माँगने के लिए। कितने खोजी ऐसे हैं, जो गुरुदक्षिणा देने के लिए तैयार हैं, कृपया हाथ ऊपर करें। धन्यवाद। हालाँकि बताया नहीं गया कि क्या गुरुदक्षिणा देनी है। गुरुदक्षिणा जो हम सबको सरश्री को देनी है, वह यह है कि जो वचन हमने सरश्री को दिया है उसी वचन के साथ हमें आगे चलना है। वचन यह कि यहाँ जो समझ हमें मिली, जो तेजज्ञान हमें मिला उसका जिक्र हम किसी भी कारणवश बाहर नहीं करेंगे। उसके साथ-साथ जो वचनबद्धता है कि संपूर्ण ज्ञान मिलने तक इस रास्ते पर चलते रहेंगे यह गुरुदक्षिणा हमें सरश्री को देनी है। जिसमें मन की और तीन टाँगे टूटेंगी और वे हमें महाआसमानी शिविर तक लेकर जाएँगी। महाआसमानी शिविर जो इसी तरह Theory और practice दोनों में होगा। उसके बाद जैसे सरश्री ने कहा कि किस तरह धन्यवाद निकलते होंगे जो वहाँ तक चलते हैं। जैसे सरश्री ने कहा कि फिर उस धन्यवाद के उठने के भी धन्यवाद देंगे कि कृपा है कि धन्यवाद उठ रहे हैं। धन्यवाद उन सभी को जिनकी वजह से हमें यह तेजज्ञान मिला। जब हमने यहाँ शुरुआत की थी तब बताया गया था कि आप भाग्यवान हो। भाग्यवान इस शब्द की गहराई पकड़ में आई होगी कि हमें क्या मिला है। ऐसा क्यों कहा गया। कई बार विचार भी आते हैं कि जो मिला है कितना सुंदर है। और जो मिला है उस पर मनन करके देखें कि हमें क्या मिला है। उसे एक कहानी स्पष्ट करेगी। एक गाँव के गुरुजी के हाथ कोई पारस लगा। पारस हम सभी जानते हैं कि वह जिस भी चीज से लगता है वह सोना बन जाती है। गुरुजी सभी को जो दर्शन लेने आते थे, उन्हें सोना बाँटते थे अपने शिष्यों में भी सोना बाँटने लगे। कहीं सोना बाँट रहा है तो स्वाभाविक है वहाँ दर्शन के लिए बहुत बड़ी लाइन लगी होगी। जो भी आ रहे थे उन्हें गुरु सोना देते हैं। सभी जगह खबर फैल गई कि फलाँ-फलाँ गाँव में गुरु सोना बाँट रहे हैं तो जो गुरु के सबसे नजदीकी शिष्य थे, जो कुछ काम के लिए कुछ समय गाँव के बाहर गए थे उन तक भी खबर पहुँची कि मेरे गुरु सोना बाँट रहे हैं तो वह शिष्य भी सोना लेने के लिए लाइन में आ गया। शिष्य ने देखा कि गुरु जिन लोगों को नहीं जानते उन्हें भी इतना सोना दे रहे हैं, मुझे कितना ज्यादा सोना देंगे क्योंकि मैंने तो गुरु की कई सालों से सेवा की है। मैं तो उनका नजदीक का शिष्य हूँ। वह शिष्य गुरु के पास आता है गुरु ने देखा, सभी को तो सोना दिया पर यह तो मेरा नजदीक का शिष्य है उसे क्या दे। गुरु ने उस के हाथ में पारस रख दिया। पारस लेकर शिष्य वहाँ से चला गया। बाहर गया मगर उसके अंदर विचार उठना शुरू हुए, यह क्या सभी को सोना दिया और मुझे यह मामूली सा पत्थर थमा दिया। अब पारस दिखता तो ऐसा ही था। तो विचार उठते रहे कि सभी को सोना दिया और मैं इतना नजदीक का सेवक हूँ। मैं तो कितनी सेवा कर रहा था और उसका गुस्सा बढ़ रहा था। मेरे साथ

ऐसा हुआ वह गुरुसे से बहुत बड़बड़ करते चलते-चलते एक नदी के किनारे पहुँचा और गुरुसे में उसने वह पारस नदी में फेंक दिया, फिर जाकर अपने मित्रों से कहा, मेरे साथ गुरुजी ने ऐसा किया। मित्रों ने भी उसके हाँ में हाँ मिलाई कि हाँ, आपके साथ ऐसा नहीं होना चाहिए वे सभी मित्र गुरु से मिलने गए और उन्होंने गुरु से पूछा कि आपने सभी को सोना दिया मगर आपका प्यारा शिष्य आया तो आपने उसे पत्थर थमा दिया। गुरु ने कहा, 'वह मूर्ख है। मैंने तो उसे पारस दिया था और उसने उसे पत्थर समझकर फेंक दिया। परख नहीं है तो पारस को भी पत्थर समझ लिया।' इसलिए परख का होना कितना महत्वपूर्ण है। अरे मुझे तो पारस मिला था। बिना परख पारस भी पत्थर है। आज पूर्ण दिवस में हमें क्या मिला है? हमें पारस मिला है LMC और एक परख भी मिली है, समझ मिली है इससे वह परख मिलेगी, हम पारस को फेंक नहीं देंगे। गुरु मंत्र जो मिला है हर पल उसे कैसे इस्तेमाल करनेवाले हैं? हम कैसे वर्तमान में रह पाएँगे और इसे फेंक नहीं देंगे क्योंकि समझ मिली है, परख मिली है। मैं कर्ता नहीं हूँ। इतनी सहजता से जो एक ही दिन में हमें मिला है, उससे तो धन्यवाद ही उठते हैं। एक उस पारस के लिए और एक उसकी परख मिली, उसके लिए वरना फेंक दिया होता। जब वह जीवन में करके देखा, यहाँ करवाया सरश्री द्वारा अलग-अलग पद्धतियों से हमारे अंदर उतारा गया। कितनी सारी गहरी मान्यताएँ समझते-समझते टूटती गईं और फिर धन्यवाद उठते हैं कि कितनी सहजता से मिला हमारी तो पात्रता भी नहीं थी। कई बार देखते हैं कि कितने लोग अध्यात्म में २०-२५ सालों से यहाँ-वहाँ भटके हैं और इतना सब कुछ करके भी कलाबाजियाँ चलती रहती हैं। वर्तमान में रहना तो दूर वर्तमान के बारे में सोचना भी मुश्किल हो जाता है और यहाँ इतनी सहजता से विचार जानकारी दी। एक कहानी है भगवान बुद्ध के जमाने की जो इसे और स्पष्ट करेगी। कहानी - एक इंसान था, जो सत्य का बहुत ही प्यासा था। सत्य पाने के लिए उसकी कुछ भी करने की तैयारी थी। वह कई जगहों पर सत्य के लिए भटक रहा था। मगर फिर भी उसे अंतिम सत्य नहीं मिल रहा था। एक दिन एक गाँव में उसे एक इंसान मिलता है और वह उसे कहता है कि 'मैं एक इंसान को जानता हूँ, जो आपको अंतिम सत्य दे सकते हैं। वह इंसान पूछता है कि कृपया मुझे बताएँ वह कौन है, मैं जरूर उनके पास जाऊँगा। वह बताता है कि वे भगवान बुद्ध हैं, जिनसे आपको सत्य मिल सकता है और वह नजदीक के गाँव में ही आए हैं तो आप वहाँ जाकर उनसे सत्य प्राप्त कर सकते हैं तो वह तुरंत भगवान बुद्ध के पास पहुँचता है और भगवान बुद्ध से अंतिम सत्य प्राप्त करता है। उसे इतनी संतुष्टि मिलती है, इतना आनंद होता है। उसकी ऐसी अवस्था थी कि वह इसे व्यक्त करने के लिए क्या करे। उसके अंदर बहुत ज्यादा धन्यवाद के भाव उठते हैं, भगवान बुद्ध के प्रति तो उठते ही है पर उस इंसान के प्रति भी उठते हैं, जिसने भगवान बुद्ध के बारे में जानकारी दी। अब वह इंसान कहाँ पर रहता है वह तो उसे पता नहीं मगर धन्यवाद के भाव में वह इतना तो करता है कि जिस दिशा में वह इंसान मिला था उस दिशा कि ओर वह पैर करके नहीं सोता था। तो उस इंसान के अंदर कैसे भाव जागे होंगे, कैसा समर्पण होगा, कितने धन्यवाद उठे होंगे। आज हमारे लिए यहाँ मौका है कि हम भी हमारे धन्यवाद के भाव प्रकट करें। आँख बंद करके.....। आँखें बंद करवाके सभी को धन्यवाद दें (सरश्री को पहले धन्यवाद दें। उसके उपरांत जो खोजी निमित्त बना उसे धन्यवाद दें। फिर वहाँ कि सभी वस्तुएँ जैसे LCD, TV, Video Cassettes, Cameras जिनकी वजह से हम सरश्री को आसानी से सुन पाए, देख पाए। हॉल, कुर्सी और कारपेट को धन्यवाद दें, जिनकी वजह से हमें बैठने की सुविधा हुई सभी माईकस को, स्पिकर को धन्यवाद दें, जिनकी वजह से सभी बातें सुनने में सहजता हुई। यहाँ की सभी व्यवस्थाएँ, फँन, ट्यूब लाइट, जनरेटर और वातावरण को दें। उन तेजसेवकों को धन्यवाद दें, जिनकी वजह से पूर्ण शिविर में हमें सुविधा हुई उन सत्यप्रमुखों को भी धन्यवाद दें, जिनकी वजह से हमें विचारसेवा में आसानी हुई। इस शिविर के

लिए उस खोजी को जो भी निमित्त बना उसे धन्यवाद देने के लिए कहें) और धन्यवाद उनके प्रति भी जिन्होंने हमें यहाँ भेजा वरना यहाँ आए ही नहीं होते । कई सारे निमित्त बनें, जिनकी वजह से हम यहाँ आएँ । किसी ने रेडिओ, TV पर प्रवचन सुने होंगे, किसी को सत्यप्रमुख ने बताया होगा या किसी का बँच देखकर लगा कि अरे यह क्या है ऐसी किसी भी तरह से Guide किया, जिसकी वजह से हम यहाँ आएँ । उनके प्रति धन्यवाद उठते हैं, उन्हें भी धन्यवाद दें ।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेडा रेफर करें ।)

अगर अर्जेडा में है तो लंच ब्रेक/चाय/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरिंग/हॉल शेअरिंग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें । जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है । जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे । ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, ब्रेक में मौन का पालन करेंगे, धन्यवाद, हॅपी थॉटस् ।)

फॉर्म + अक्शन प्लॅन

आप सभी को शुभेच्छा हॅपी थॉटस् । अभी हम एक फॉर्म भरने जा रहे हैं । कृपया तेजसेवक फॉर्म बाँटें । सत्याचार्य फॉर्म एक्सप्लेन करें ।

फॉर्म भरने के लिए महत्वपूर्ण प्वाइंट्स -

1. खोजी को अपना पूरा नाम लिखने के लिए कहें ।
2. सभी सवालों के जवाब लिखना अनिवार्य है, यह बताएँ ।

फॉर्म भरने के उपरांत सत्याचार्य आगे का अक्शन प्लॅन बताएँ । (सत्याचार्य अक्शन प्लॅन एक्सप्लेन करें ।) महाआसमानी शिविर करने के लिए आगे की तैयारी करना कितना इम्पोर्टन्ट है, वह बताएँ ।

(सत्याचार्य कृपया अर्जेन्डा रेफर करें ।

अगर अर्जेन्डा में है तो लंच ब्रेक/चाय/एक्सरसाइज ब्रेक/ग्रुप शेअरींग/हॉल शेअरींग/मनन ब्रेक की अनाउन्समेंट करें । जैसे अभी यह..... ब्रेक होने जा रहा है । जैसे ही भजन लगता है हम अंदर आएँगे । ब्रेक का पूर्ण लाभ लेंगे, धन्यवाद ।)

सहज मन से कैसे जीएँ

प्रवचन के पहले-

इस शिविर के अंतिम पड़ाव में और एक महत्वपूर्ण प्रवचन हम सुनने जा रहे हैं, जिससे समझेंगे कि आगे हम किस प्रकार का जीवन जीनेवाले हैं, जिसके उपरांत कुछ बातें करेंगे, धन्यवाद, हॅपी थॉट्स ।

प्रवचन के बाद -

आप सभी को शुभेच्छा, हॅपी थॉट्स । अभी हमने सरश्री के साथ भजन गाया । भजन जो यही बता रहा था कि अभी हम सहज मन के साथ जीवन जीने को तैयार हैं । वह जैसे गवाए गाने के लिए तैयार है । क्योंकि सहज मन है तो ही खुशी है । तोलू मन तो पहले ही हमने सरश्री को दे दिया है । आगे इस सहज मन के साथ हम जीवन जीएँगे । LMC मंत्र से हम पूर्ण रूप से वर्तमान में आनेवाले हैं । इसी सहज मन के साथ हमारा हर कार्य बेस्ट होनेवाला है । हमारा जीवन सीधा, सहज, सरल परंतु शक्तिशाली होनेवाला है । तो हम यहाँ पर पक्का इरादा करनेवाले हैं कि आगे जीवन में हर घंटा हम समय संपन्न बननेवाले हैं और सहज मन के साथ जीनेवाले हैं । तो क्या हम सब इन बातों के लिए तैयार हैं ? धन्यवाद, इस इरादे के साथ यहाँ पर शिविर समाप्त होता है । सभी अपने badges तेजस्थान पर समर्पित करेंगे । (बाहर books, Cassettes उपलब्ध हैं तो बताएँ । Radio, TV पर सरश्री के प्रवचन की अनाउन्समेंट करें । अगर नए खोजियों के लिए संपूर्ण लक्ष्य शिविर plan हुआ है तो उसकी भी अनाउन्समेंट करें । इस SA talk के बाद शिविर के बाद का action plan खोजियों में बाटा जाए व अनाउन्स भी किया जाए ।) महाआसमानी शिविर तक की यात्रा दिल और दिमाग का तालमेल बिठाने की यात्रा है । इस यात्रा में तोलू मन, उसके कार्य करने का तरीका, इसकी 3 टाँगे और उनसे कैसे आजाद हो सकते हैं, यह जानने का आज अवसर था । इन पर कार्य करते हुए आगे के श्रवण लिए हम सभी अपने-अपने सेंटर पर आनेवाले हैं ।

यहाँ पर सरश्री ने मुझे सेवा का मौका दिया इसके लिए सरश्री को कोटि-कोटि धन्यवाद और आप सभी ने जो सहयोग दिया उसके लिए आप सबको भी धन्यवाद हॅपी थॉट्स ।

સરશ્રી ધન્યવાદ